

❀ ज्ञान-

- 1] यह तो गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। गुड़ शिवबाबा को कहा जाता है, वह सबकी अवस्था को जानते हैं। हरेक की पढ़ाई से समझ सकते हैं—कौन कैसे पढ़ते हैं, कितनी सर्विस करते हैं। कितना बाबा की सर्विस में जीवन सफल करते हैं। ऐसे नहीं, इस ब्रह्मा ने घरबार छोड़ा है इसलिए लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। मेहनत करते हैं ना। यह नॉलेज बहुत ऊंची है। कोई अगर बाप की अवज्ञा करते हैं तो एकदम पत्थर बन पड़ते हैं। बाबा ने समझाया था—यह इन्द्रसभा है। शिवबाबा ज्ञान वर्षा करते हैं। उनकी अवज्ञा की तो शास्त्रों में लिखा हुआ है पत्थरबुद्धि हो गये।
- 2] बाबा सबको लिखते रहते हैं। साथ में सम्भाल से कोई को ले आओ। ऐसे नहीं, विकारी अपवित्र यहाँ आकर बैठे। नहीं तो फिर ले आने वाली ब्राह्मणी पर दोष पड़ जाता है। ऐसे कोई को ले नहीं आना है। बड़ी रेसपॉन्सिबिलिटी है। बहुत ऊंच ते ऊंच बाप है। तुमको विश्व की बादशाही देते हैं तो उनका कितना रिगार्ड रखना चाहिए। बहुतों को मित्र-सम्बन्धी आदि याद पड़ते हैं, बाप की याद है नहीं। अन्दर ही घुटका खाते रहते हैं।
- 3] तुम बच्चों में जिसने जितना ज्ञान उठाया है, उस अनुसार ही सर्विस कर रहे हैं। मुख्य बात है ही गीता के भगवान की। सूर्यवंशी देवी-देवताओं का यह एक ही शास्त्र है। अलग-अलग नहीं है। ब्राह्मणों का भी अलग नहीं है। यह बड़ी समझने की बातें हैं। इस ज्ञान मार्ग में भी चलते-चलते अगर विकार में गिर पड़े, तो ज्ञान बह जायेगा। बहुत अच्छे-अच्छे जाकर विकारी बने तो पत्थरबुद्धि हो गये। इसमें बड़ी समझ चाहिए।
- 4] जो पूरी अंगुली देते हैं उनको ही सर्विसएबुल कहेंगे। बाकी घुटका खाने वाले तो नुकसान करते हैं और ही डिसर्विस करते हैं, विघ्न डालते हैं। यह तो जानते हो—महाराजा-महारानी बनेंगे तो उन्हीं के दास-दासियां भी चाहिए। वह भी यहाँ के ही आयेंगे। सारा मदार पढ़ाई पर है। इस शरीर को भी खुशी से छोड़ना है, दुःख की बात नहीं। पुरुषार्थ के लिए टाइम तो मिला हुआ है। ज्ञान सेकेण्ड का है, बुद्धि में है शिवबाबा से वर्सा मिलता है। थोड़ा भी ज्ञान सुना, शिवबा को याद किया तो भी सकते हैं।
- 5] बाप तो 21 जन्मों के लिए तुमको सुख-शान्ति दोनों देते हैं। कोई तो शान्तिधाम में पिछाड़ी तक रहते होंगे। जिनका पार्ट है, वह इतना सुख थोड़ेही देख सकेंगे। वहाँ भी नम्बरवार मर्तबे तो होंगे ना। भल दास-दासियां होंगे परन्तु अन्दर थोड़ेही घुस सकेंगे। कृष्ण को भी देख न सकें। सबके अलग-अलग महल होंगे ना। कोई टाइम होगा देखने का।
- 6] यहाँ की गऊ और वहाँ की गऊ में भी कितना फर्क है। कृष्ण थोड़ेही गऊयें चराता था। उन्हीं के पास तो दूध हेलीकाप्टर से आता होगा। यह किचड़पट्टी दूर रहती होगी। सामने घर में थोड़ेही किचड़ा रहेगा। वहाँ तो अपरमअपार सुख हैं, जिसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना है।
- 7] अनुभवी आत्मार्ये कभी वायुमण्डल वा संग के रंग में नहीं आ सकती।

❀ योग-

- 1] मीठे बच्चे—बुद्धि को रिफाइन बनाना है तो एक बाप की याद में रहो, याद से ही आत्मा स्वच्छ बनती जायेगी।
- 2] ज्ञान तो बहुत ढेर चाहिए। रिफाइननेस बहुत आनी है। अभी तो योग बड़ा मुश्किल कोई का लगता है। योग के साथ फिर नॉलेज भी चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ योग में रहना है। योग में नॉलेज जरूर चाहिए।

❀ धारणा-

- 1] बाप जो समझाते हैं उनको उगारना चाहिए।
- 2] बापदादा ने देखा बच्चे योग करने और कराने दोनों में होशियार हैं। तो जैसे योग करने-कराने में योग्य हो, ऐसे प्रयोग करने में योग्य बनो और बनाओ। अभी प्रयोगी जीवन की आवश्यकता है। सबसे पहले चेक करो कि अपने संस्कार परिवर्तन में कहाँ तक प्रयोगी बने हैं? क्योंकि श्रेष्ठ संस्कार ही श्रेष्ठ संस्कार के रचना की नींव हैं। अगर नींव मजबूत है तो अन्य बातें स्वतः मजबूत हुई पड़ी हैं।

❀ सेवा-

- 1] आबू की महिमा को अच्छी रीति सिद्ध करना है।
-